शोध – पत्र

शोध पत्र का सारांश लगभग 200 शब्दों में तथा 1.5 लाइन मार्जिन में हिन्दी या अंग्रेजी में फोन्ट कृतिदेव 10 या टाइम्स न्यू रोमन टाइप किये हुए, दिनांक 10.02.2015 तक ई–मेल govtcollegedhamnod@gmail.com पर ही प्रेषित करें। पूर्ण शोध पत्र लगभग 1000 से 1500 शब्दो में पृथक से हार्ड एवं सॉफ्ट कापी में दिनांक 23 एवं 24 फरवरी 2015 को स्वयं उपस्थित होकर जमा करें।

पंजीयन शुल्क

पंजीयन शुल्क (प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापको हेतु)रूपये 600/–शोध विद्यार्थी/अतिथि विद्वानो हेतु रूपये 400/–राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा "प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय धामनोद" के नाम से देय होगी। अथवा सेमिनार स्थल पर नगद भी जमा कराई जा सकती हैं।

नोट : शोध पत्र रिसर्च जर्नल में प्रकाशित करने के इच्छुक पंजीयन शुल्क के अतिरिक्त रूपये 600/– का बैंक ड्रॉफ्ट भी प्रेषित करें।

आयोजन सचिव

डॉ.श्रीमती जी. सोलंकी

मो.नं. 9826048102

संयोजक

डॉ.आर.सी पान्टेल

मो.नं. 9630703865

संरक्षक

डॉ.टी.एम. खान

मो.नं. 8435807686

परामर्शदाता

प्रो.ए.एस. मंडलोई मो.नं. 9424814035

प्रो.श्रीमती वीणा बरडे मो.नं. 9993766872

संपर्क समिति

डॉ.श्रीमती किरण सिटोले मो.नं. 9993736871

डॉ.बी.एस. डावर मो.नं. 9993315698

डॉ.आर.के रावत मो.नं. 9893835175

सम्माननीय साथियों – अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरवमयी क्षण हैं, कि शासकीय महाविद्यालय धामनोद वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता, चुनौतियां एवं समाधान विषय पर शोध संगोष्ठी आयोजित करने जा रहा हैं राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी की सार्थकता तब होगी, जब सभी सृजनात्मक, रचनात्मक साथियों की भावनाए, कार्य एवं अनुभव संयोजित होकर साकार होंगे। आयोजन स्थल – धामनोद नगर मध्यपद्रेश के धार जिले में विध्यांचल पर्वत श्रेणी के नीचे नर्मदा नदी की गोद में, इन्दौर से 78 कि.मी. दक्षिण में आगरा बंई राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित हैं। धामनोद नगर, पर्यटन, धार्मिक एवं ऐतिहासिक नगरो से घिरा हुआ हैं। यहा से मात्र 10 कि.मी. पूर्व में नर्मदा तट पर प्राचीन एवं धार्मिक नगर महेश्वर स्थित हैं। ऐतिहासिक पर्यटन स्थल माण्डव धामनोद नगर से मात्र 45 कि.मी. दूर स्थित हैं। आवागमन की दृष्टि से हर 10 मिनट में इन्दौर से बस सुविधा उपलब्ध हैं। महाविद्यालय महेश्वर फाटे से 02 कि.मी. की दूरी पर पूर्वी भाग में स्थित हैं।

विषय परिचय – मानव जीवन का हर पक्ष विविधता से भरा पड़ा हैं। हमारा प्रारंभिक कालखण्ड सरलतम था लेकिन जैसे–जैसे हमारी आवश्यकताएं बढ़ी उसके समाधान के वैज्ञानिक तरिके बढ़े वैसे ही समाज की संरचना भी बदलती गयी। वर्तमान में नैतिक मूल्यों का ह्रास सबसे बड़ा संकट हैं। नैतिक मूल्य, जीवन के नींव के पत्थर हैं, जिस पर शरीर रूपी भवन खड़ा होता हैं। यदि नींव ही कमजोर होगी तो ऊपर के ढांचे को धराशाही होने में समय नही लगेगा। आधुनिक सुख सुविधाओं और साधनो को बटोरने की आपाधापी में नैतिक मूल्यों का ह्रास सबसे बड़ा संकट हैं। युवा वर्ग आधुनिक बनने की होड़ में परम्परा और मूल्यों से कटता जा रहा हैं जिसके कारण उसके अंदर अनेक तरह के दूर्गुण आ गए हैं। आज समाज में जीवन जीने के प्रतिमान बदल रहे हैं। अब बच्चे संस्कारित होने के लिए नही, बल्कि धन कमाने के गुर सिखाने के लिए पढ़ाए जाते हैं। माता–पिता अपने बच्चे के लिए कार–कोठी, बंगले के बिना अपने लाडले का जीवन निरर्थक मानते हैं। युवा बदलाव की प्रक्रिया में आगे तो बढ़ा, लेकिन अपनी पारम्परिक संस्कृति की खोल को उतार दिया। नैतिक मूल्य मनुष्य के सुखी संयमित समाजोपयोगी जीवन के लिए सशक्त आधार प्रदान करते हैं। नैतिक मूल्यों में कमी सामाजिक विघटन की ओर संकेत करती हैं। प्रत्येक काल और समय में उनका अस्तित्व अनिवार्य हैं।

यदि युवाओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम ही न हो, देश भक्ति का जज्बा न हो, समाज के प्रति दायित्वबोध न हो और उनका अपना व्यक्तिगत आचरण संयमित न हो, तो किस प्रकार अपना और राष्ट्र का हित कर पाएंगे। यदि अब हमने अधिक विलम्ब किया और युवाओं को कर्तव्यबोध कराने में सफल नही हुए तो शायद इतिहास भी हमें क्षमा नही कर पाएगा। युवा बदलाव की प्रक्रिया में जो आगे बढ़ा लेकिन अपनी पारम्परिक संस्कृति की खोल को उतार दिया। नैतिक मूल्य मनुष्य के सुखी संयमित समाजोपयोगी जीवन के लिए सशक्त आधार प्रदान करते हैं। नैतिक मूल्यों में कभी सामाजिक विघटन की ओर संकेत करती हैं। प्रत्येक काल और समय में उनका अस्तित्व अनिवार्य हैं।यदि युवाओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम ही न हो देश भक्ति का जज्बा न हो, समाज के प्रति दायित्वबोश न हो और उनका अपना व्यक्तिगत आचरण संयमित न हो तो किस प्रकार अपना और राष्ट्र का हित कर पाएंगे। यदि अब हमने अधिक विलम्ब किया और सुवाओं को कर्तव्यबोध कराने में सफल नही हुए तो शायद इतिहास भी हमें क्षमा नही कर पाएगा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता, चुनौतियां एवं समाधान

उपशीर्षक –

1. वर्तमान परिवेश में नैतिक मूल्य।
2. नैतिक मूल्य और वर्तमान शिक्षा।
3. नैतिक मूल्य और युवा पीढ़ी।
4. नैतिक मूल्य की वर्तमान दशा एवं दिशा
5. नैतिक मूल्यों के गिरावट में परिवार एवं समाज की भूमिका
6. वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता।
7. नैतिक मूल्य और साहित्य।
8. शेक्षणिक विकास में नैतिक मूल्यो का योगदान।
9. नैतिक मूल्यो में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका।
10. शेक्षणिक विकास में पाठ्योत्तर गतिविधियों का योगदान।
11. आधुनिक जीवन और सामाजिक मूल्य।

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

23, 24 फरवरी 2015

पंजीयन – प्रपत्र

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता,चुनौतियां एवं समाधान

1. नाम .....
2. पद .....
3. संस्था .....
4. शैक्षणिक योग्यता .....
5. पता .....
6. टेलीफोन /मो.नं. .....
7. पंजीयन राशि .....

   ड्रॉफ्ट नं. ..... दिनांक .....

   नगद .....

नोट : शोध पत्र के एक से अधिक प्रस्तुतकर्ता होने पर प्रत्येक व्यक्ति 600/– की राशि भेजे। (अधिकतम 02 प्रस्तुतकर्ता)

8. शोध का विषय .....

9. प्रमाण – पत्र –यह प्रमाणित किया जाता हैं कि उक्त शोध पत्र मेरा/हमारी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं।

10. नियमानुसार 45 वर्ष से कम उम्र वाले प्रतिभागियों को ही यात्रा व्यय के रूप में द्वितीय श्रेणी रेल किराया या वास्तविक बस किराया प्रमाणिकरण पर ही देय होगा।

11.पंजीयन के समय शोध पत्र की एक छायाप्रति अवश्य जमा करायें। 12. रात्रि विश्राम का व्यय स्वयं को वहन करना होगा।

शासकीय महाविद्यालय धामनोद, जि.धार (म.प्र.)

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता चुनौतियां एवं समाधान

दिनांक 23 एवं 24 फरवरी

प्रति,
प्रो./डॉ.....

प्रेषक
डॉ.श्रीमती जी सोलंकी
संयोजक . शोध संगोष्ठी
विभाग. हिन्दी
मो. 9826048102

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

23, 24 फरवरी 2015

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता, चुनौतियां एवं समाधान

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग

मध्यप्रदेश शासन, भोपाल (म.प्र.)

आयोजक

शासकीय महाविद्यालय, धामनोद
जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष – 07291–233572, 280111
ई–मेल hegcdhamdha@mp.gov.in
govtcollegedhamnod@gmail.com

आयोजन सचिव
डॉ.श्रीमती जी.सोलंकी
मो.नं. 9826048102

संरक्षक एवं प्राचार्य
डॉ.टी.एम. खान
मो.नं. 8435807686